

आखिर कब तक मजबूर रहेगा मजदूर

श्री

मिक अपना श्रम बेचकर न्यूनतम वेतन प्राप्त करता है। यही कारण है कि ऐसे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है। इसलिए यह दिन अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संघों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए है। इस प्रकार, यह समाज में उनके योगदान करने और उसे पहचानने के एक विशेष दिन है। भारत सरकार ने बहुत से देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य उस दिन मजदूरों की भलाई के लिए काम करने वे मजदूरों में उनके अधिकारों के प्रति जागरूत लाना होता है। मगर आज तक तो कहीं ऐसा हो नहीं पाया है।

किसी भी राष्ट्र को प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के लिए पाए ही रहा होता है। मजदूर वर्ग की मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तोकरी करता है। लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तस्वीर रहा है। हांगेर देश में मजदूरों का शोषण आज भी जारी है। सभी बीते के साथ मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महारांग और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म करकर रह गया है।

मजदूर दिवस दुनिया के सभी कामगारों, श्रमिकों को समर्पित होता है। इस बार की अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस 2024 की थीम है सामाजिक न्याय और सभी के लिए सभी कार्य। इसके अलावा भी कई बिंदुओं को रखा गया है। इस थीम का उत्तर है मजदूरों की गरिमा का खाला रखना और उन्हें शारीरिक पूर्ण कामकाजी बाटवरण प्रोत्साहन करना।

महारांग यांगी के बाहर था कि किसी देश की तरकी उस देश के कामगारों पर निर्भर करती है। उत्त्योगपति खुद को मालिक समझने की बजाय अपने-अपने को ट्रट्टी समझे। मगर ऐसा होता नहीं है। मालिक आज भी मालिक बने हुए हैं। मजदूर सिर्फ मजबूर होकर रह गया है। इसी कारण भारत में मजदूरों की स्थिति बेहतर नहीं है। हांगेर देश की सरकार भी किसानों पर निर्भर करती है। उत्त्योगपति खुद को मालिक समझने की बजाय अपने-अपने को ट्रट्टी समझे। मगर ऐसा होता नहीं है। मालिक आज भी मालिक बने हुए हैं। मजदूर सिर्फ मजबूर होकर रह गया है।

महारांग यांगी के बाहर था कि जानक बनाना शुरू किया गया है। मगर जब उनके अपलोड यांगी पठनारों का समय आता है तो सब इधर-उत्तर ताके लग जाते हैं। मजदूर फिर बेचारा मजबूर बनकर रह जाता है।

गुरु नानक देव जी ने भी अपने समय में किसानों, मजदूरों और कामगारों के हक आजावज उठाई थी। गुरु नानक देव जी ने हाकाम करना, नाम जपना, बाट छक्का और दसवधि इससे कहीं उलटी है।



निकालना का संदेश दिया था। गरीब मजदूर और कामगार का विनाशका का राज स्थापित करने के लिए मनुष्य से गुमुख तक की यात्रा करने का संदेश दिया था।

मजदूर एक ऐसा शब्द है जिसके बोलने में ही मजबूरी ज्ञालकरी है। सबसे अधिक मेहनत करने वाला मजदूर आज भी सबसे अधिक बदलाल स्थिति में है। दुनिया में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां मजदूरों की स्थिति में सुधार हो पाया है। दुनिया के सभी देशों की सरकार मजदूरों के द्वारा जिसके लिए आज भी तरकी उसका भद्रता करती है। बहुत सी योजनाएं व कानून बनाती हैं। मगर जब उनके अपलोड यांगी पठनारों का समय आता है तो सब इधर-उत्तर ताके लग जाते हैं। मजदूर फिर बेचारा मजबूर बनकर रह जाता है।

इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाया है। इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार करना होता है।

हमारे देश केमजदूरों को न तो मालिकों द्वारा किए गए कार्य की पूरी मजदूरी दी जाती है और ना ही अन्य वाहिनी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है। गांव में खेती के प्रति लोगों का रुक्षन कम हो रहा है। इस कारण बड़ी संख्या में लोग मजदूरी करने के लिए शहरों की तरफ पलायन कर जाते हैं। जहां ना उनके रहने की कोई सही व्यवस्था होती है ही उनके रहने को काइ ढग का काम मिल पाता है। मगर अधिक कमजोरी के चलते शहरों में रहने वाले मजदूर वर्ग जैसे तैसे वर्तने के लिए आज भी बहुत बड़ी-बड़ी करती हैं। मगर जब उनके अपलोड यांगी के बाहर रहने की समय आता है तो सभी पैछी हट जाती है। इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाया है।

भारत में एक मई का दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई 1923 की मद्रास दिवस के तौर पर मनाया शुरू किया गया था। इस की शूरूआत भारत मजदूर किसान पार्टी के नेता कामेड सिंगारेकुल चेट्टाया ने शुरू की थी। भारत में मद्रास के हाईकोर्ट सामने एक बड़ा प्रदर्शन किया और एक संकल्प के पास करके इह सहार्ता बहुत गई है कि इस दिवस को भारत में एक कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाये और इस दिन खुदी का एलान किया जाये। वर्तमान में भारत सेमेट लगभग 80 मुल्कों में पहली मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है।

भारत में एक मई का दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई

के प्रति मालिकों के मन में जरा भी सहानुभूति के भाव नहीं रहते हैं। उनसे 12-12 घंटे लगातार काम करवाया जाता है। घंटों धूप में खड़े रहक बड़ी बड़ी कोटियां बनाने वाले मजदूरों को एक छपर तक नसीब नहीं हो पाता है। हमारे देश में आज सबसे ज्यादा काई प्रताडित ब उपक्रित है तो मजदूर वर्ग है। मजदूरों की सुनने वाला देश में कोई नहीं है। कारखानों में काम करने वाले मजदूरों पर हर वक्त इस बात की तलवार लटकती रहती है कि ना जाने कब मार्कर मजदूरों से निर्धारित समय से अधिक काम लिया जाता है। विरोध करने पर काम से हटाया जाता है। मजदूरों में मजबूर कारखाने के मालिकों की ज्यादा जाती है। कारखानों में कार्यकारी भट्टनी कर काम से हटा देता है। कारखानों में कार्यकारी भट्टनी द्वारा लटकती रहती है कि नाना फर्ज के मापदण्डों के अनुसार किसी भी मजबूर होता है। कारखानों में श्रमिक सुविधायें नहीं जाती हैं।

कई कारखानों में तो मजदूरों से खतरनाक काम करवाया जाता है जिस कारण उनका कई प्रकार की बिमारियां लग जाती हैं। कारखानों में मजदूरों को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा, पैकेने का सफाया, विश्राम की सुविधा तक उपलब्ध नहीं होती। विरोध करने पर काम से हटाया जाता है। मजदूरों की सुविधायें नहीं जाती हैं। मजदूरों में मजबूर कारखाने के मालिकों की शर्तों पर काम करने के मापदण्डों के अनुसार किसी भी मजबूर होता है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस ने अपना फर्ज भरा दिवस होता है। दिन रात गोंगों-रोटी के बुगाड में जाहेजहांद करने वाले मजदूर वर्ग के लिए जाने वाली रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के अंतर्गत वर्गीकृत होता जाता है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है। मजदूरों की रुक्षन के लिए वे जाने वाली मजदूर यूनियनों की ज्यादा जाती है।

हमारे देश का मजदूर दिवस के

